This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

काला क़ळानून

;जन नाट्य मंचऋ अगस्त १९८१ऋ ३० मिनटऋ १० कलाकार।द्ध

पात्र विभाजन

१. रानी
२. पूंजीपति-१
३. पूंजीपति-२
४. चमचा-१
५. चमचा-२
६. जनता-१/ ढिंढोरची
७. जनता-२
८. जनता-३
९. जनता-४
१०. जनता-५

वुळछ अभिनेता एक व़ळतार में ढोल, टीन, मंजीरे, पीपनी, दुंदुभी बजाते हुए आते हैं। दायरे में खड़े होते हैं। ढोलची बीच में आकर ढिंढोरा पीटता है। बीच-बीच में बाव़ळी अभिनेता अपने-अपने साज़ बजाकर उसवेळ साथ गाते हैं।

ढिंढोरची : सुनो-सुनो ओ भारतवासी ज़रा लगाकर कान।
रानीजी वेळ हुक्म पे करता हूं ऐलान।
ढाई बरस बनवास बिताकर फिर वापिस आई हैं।
पूरे देश का दुःख हरने का निश्चय कर आई हैं।
जिसको हो तकलीफ़ळ वह निःसंकोच महल पर आए।
रानीजी को अपने मन की शंका दे बतलाए।

बाव़ळी अभिनेता बैठते हैं।

रानीजी वेळ हुक्म पर, यह ऐलान जारी किया जाता है, कि देश जिस अंधकार की खाई में गिरा है, उसे वहां से बाइज़्ज़त निकाला जाएगा। लूट-खसोट, दंगे-फ़ळसाद, महंगाई, भूख, ग़रीबी, बदहाली, बेरोज़गारी, सब रानीजी की छत्र छाया में आ जाएंगे। सब पर देवी की वृळपा दृष्टि रहेगी। देवीजी की मर्ज़ी वेळ बग़ैर पत्ता भी नहीं खड़वेळगा। जगतो(ार का भार उठाने की दैवी शक्ति देवीजी को विरासत में नसीब हुई है, इससे किसी को इंकार नहीं।

दो चमचे : इंकार किया तो अंदर कर देंगे सालों को...

अभिनेता फिर साज़ छेड़ते हैं। रानी का प्रवेश। कंधों पर कपड़ा लटक रहा है। हल्की नीली पृष्ठभूमि पर सफ़ेद फ़ळाख़्ता बनी है। हाथ में समाजवादी माला। चमचे टेलीफ़ळोन और बंदूव़ळ लेकर पीछे-पीछे चलते हैं।

रानी : ओम् समाजवादम्, प्रजातंत्रम्, धर्मनिर्पेक्षम्।
ओम् सरमायेदारी नमः, ज़मींदारी नमः, विदेशी पूंजी नमः, मुनाफ़ळाख़ोरी नमः, भ्रष्टाचारम् नमः, शतः शतः नमः। ओम् महामूर्खम्ः जनताम् जनार्दनम्, तुमुम कोम सर्वम सेम अधिकतम् प्रणामम्।

गंगा जल छिड़ककर गद्दी ग्रहण करती है। दो पूंजीपतियों का प्रवेश।

चमचे : कान बंद, आंख बंद, मुंह बंद, सब वुळछ बंद, समाजवाद वेळ कर्णधार, देश की नैया वेळ पाल पतवार, राशन पानी वेळ एजेंट, शमशानों वेळ ठेवेळदार, तेल श्री, कोयला विभूषण हाज़िर हैं।

दोनों पूंजीपतिः देवी हम तेरे सेवक हैं।
हैं भगत पुराने वक़्तों वेळ
तेरी गद्दी वेळ आसन हैं।
हैं पाए नवाबी तख़्तों वेळ
तू रखे अगर किरपा दृष्टि,
हम तेरे ख़ज़ाने भर देंगे।
तेरे दुश्मन की खाल खींच।
हम उसमें भूसा भर देंगे।
जागो देवी, जागो-जागो।
जागो देवी, जागो।
जागो, जागो, जागो

रानी : हमारेम् सर्वम् भक्तम् निश्चिंतम् रहम्।

दोनों पूंजीपतिः हे महाप्रकोप, हे आंधी, हे ज्वाला बेधड़क।
हे महाचंडी, हे दुर्गा, तू है बिजली की कड़क
तेरे आने से नए उद्यम ने राहत पाई है।
बेशरम, लुच्चे, मजूरों की तो शामत आई है
तुझसे है आशा बहुत उद्योगपतियों को प्रिय।
अफ़ळसरों को और ज़मींदारों, सेठों को प्रिय

हमको है उम्मीद हड़तालें तू बंद करवाएगी।
रोज़मर्रा वेळ यह धरने तू ख़त्म करवाएगी
और जिस मुनाफ़ेळ पर हमारा हव़ळ है, वह हमें दिलवाएगी।
और हमारी मिल-मशीनें रात-दिन चलवाएगी

रानी : पूंजीपतियः, उद्योगपतियः, भूपतियः, अधिकारीगणम्, चमचयः दायम्, बांयम्, सर्वम संपूर्णमः निश्चिंतम्।

चमचे : निश्चिंतमः निश्चिंतमः।

पूंजीपति : बोल दिल्ली वेळ गोल दरबार वाली माता तेरी सदा ही जय!
हे रानी तेरी सेवा में
यह काली गठरी रखते हैं
हम सबकी श्र(ा का तोहफ़ळा
हम पेश तुझे यह करते हैं।
इस गठरी में हैं गुप्त अस्त्र
जादू टोने और जाप तंत्र
धन्ना सेठों वेळ प्रेम पत्र
जिनसे चलता है प्रजातंत्र
इस गठरी वेळ बल पर रानी
तू सब पर होवेगी हावी
और वक़्ते ज़रूरत निश्चित है
हम सबवेळ काम तू आवेगी

रानी : यूं तो मेरी वूळटनीति, जादू टोने काफ़ळी हैं,
बरसों से जो चले आ रहे वह नुस्ख़े काफ़ळी हैं,
पर इस गठरी वेळ नुस्ख़ों को भी प्रयोग में लाऊंगी,
इनवेळ ज़रिये देश की नैया को मैं पार लगाऊंगी।

पूंजीपति-१ : हम तो आपवेळ चरणों वेळ दास हैं।

पूंजीपति-२ : हम आपकी अंतिम आस हैं।

पूंजीपति-१ : हमें बताओ हम क्या करें, कहां जाएं?

पूंजीपति-२ : भुखमरों और बेरोज़गारों से वैळसे ख़ुद को बचाएं?

पूंजीपति-१ : आज तक जिन्हें हमने तरसाया, तड़पाया।

पूंजीपति-२ : जिन्हें ख़ून वेळ आंसू रुलवाया।

दोनों पूंजीपतिः उन्होंने मिलकर हम पर बहुत ज़ुल्म ढाया।

रानी : मत कहो हमसे किस पर किसने ज़ुल्म है ढाया। हमसे छिपा नहीं है संसार का हाल, देश की दुर्दशा। हमने तो अवतार ही लिया है इस देश की दीन-हीन जनता, अर्थात् मज़दूर, धर्म से पीड़ित, लखपतियों और करोड़पतियों वेळ उ(ार वेळ लिए।

दोनों पूंजीपतिः क्या उ(ार किए आपने?

रानी : हड़ताल वेळ दानव से मुक्ति दिलायी तुमको। बोनस की डायन नहीं छू पाई तुमको। घेराव की डायन नहीं डस पाई तुमको। क्यों मेरे लाडलो, मेरे सांवलो, भूल गए?

दोनों पूंजीपतिः नहीं मां, भूले नहीं।

पूंजीपति-१ : पर क्या हुआ छंटनी का अधिकार?

रानी : तुम्हारा है।

पूंजीपति-२ : तनख़्वाह की कटौती?

रानी : हमारा परम प्रिय नारा है।

पूंजीपति-१ : यूनियनों पर पाबंदी?

रानी : जन्म सि(अधिकार सिर्फ़ळ तुम्हारा है।

पूंजीपति-२ : महंगाई में बढ़ौती?

रानी : डूबती, लड़खड़ाती, अर्थव्यवस्था का यही एक इकलौता सहारा है।

दोनों पूंजीपतिः भ्रष्टाचार, मिलावट, माल में गिरावट, चोरबाज़ारी, जमाख़ोरी, काले धन वेळ फ़ळरिश्ते कहां रहेंगे?

रानी : तुम्हारे गोदामों में, हमारे ज़ेर-ए-साए। निश्चिंतम्। हा... हा... हा...। जाओ, देश की प्रगति में हाथ बंटाओ। तेल पी जाओ। कोयला खा जाओ। हर घर, हर चौबारे में, एक श्मशान बनवाओ।

दोनों पूंजीपतिः जय हो आपकी महामानवी, आपकी जय हो।

पूंजीपति-१ : पर आप जनता पर यह लादेंगी वैळसे?

पूंजीपति-२ : वैळसे पुळसलायेंगी उन्हें? उन्हें तो आपसे वुळछ और ही उम्मीद है।

पूंजीपति-१ : जनता जब वुळछ मांगे?

रानी : झट वादा कर डालो।

पूंजीपति-२ : भूख वेळ मारे गर वह रोएं?

रानी : नारों का अमृत बरसाओ।

पूंजीपति-१ : बेकारी की बात करें तो?

रानी : देश धर्म की व़ळसमें खाओ।

पूंजीपति-२ : महंगाई से तड़पें गर तो?

रानी : अर्थशास्त्र का पाठ पढ़ाओ।

दोनों पूंजीपतिः फिर भी दाल न गल पाए तो?

रानी : तो...!! हा हा हा। विदेशी संकट का जाप करो।

दोनों पूंजीपतिः धन्य-धन्य आप, धन्य आपवेळ माता-पिता।
धन्य हुआ यह देश हमारा, धन्य हमारी व्यवस्था।
जय, जय देवी।
जय, जय माता,
भारत भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे।
जय, जय, जय, जय हे।

रानी ध्यान मुद्रा में फ़्रीज़ हो जाती है। पूंजीपति रानी को नमस्कार करवेळ निकलते हैं तो अंदर आते हुए पांच लोगों से टकरा जाते हैं।

पूंजीपति-१ : छिः छिः छिः छिः अबे देख वेळ नहीं चला जाता है?

पूंजीपति-२ : मैं तो पहले ही कह रहा था, इनकी आंखों पर चर्बी चढ़ गई है। साले खुल्ले में चौड़ा होकर चलते हैं।

जनता-१ : अरे लाला अपनी मेहनत का खाते हैं और चौड़ा होकर घूमते हैं, कोई चोरी डवैळती नहीं करते जो दुबक वेळ चलें, हां।

जनता-२ : लालाजी पैसा कमाने की धुन में ख़ुद तुम्हारी आंखें पूळट गई हैं। तुम्हें ख़ुद देखकर चलना चाहिए।

पूंजीपति-२ : बेटे हमें पढ़ाने की कोशिश मत करो। जब देख लिया था कि हम आ रहे हैं तो रास्ता क्यों नहीं छोड़ा।

जनता-३ : सेठजी, यह रास्ता तुम्हारा नहीं है, इस पर हमारा भी अधिकार है।

पूंजीपति-१ : *;पूंजीपति-२ सेव्द्ध* अजी छोड़िए जी, क्यों इनवेळ मुंह लगते हैं। अच्छे-भले रानी वेळ दर्शन करवेळ आ रहे थे। सब अपशगुन हो गया।

[पूंजीपति जाते हैं। चमचे पांचों को रोकते हैं, दो को खींचकर एक तरफ़ळ ले जाते हैं।]

चमचा-१ : क्यों बे, यहां क्या किसान रैली हो रही है जो मुंह उठाए चले आ रहे हो?

चमचा-२ : अबे यह रानीजी का महल है, यहां पढ़े-लिखे ऊंचे ख़ानदानी लोग ही जा सकते हैं, तुम्हारे जैसे उजड्ड नहीं।

जनता-१ : मालूम है रानीजी का महल है, इसीलिए यहां आए हैं। सवेरे ढिंढोरची कह गया था सब आ सकते हैं।

चमचा-२ : रास्ता नापो अपना। ढिंढोरची कह गया था! नख़रे तो देखो सालों वेळ।

जनता-२ : हमें रानीजी वेळ दर्शन चाहिए।

जनता-१ : अपनी तकलीफ़ळ बतानी है उन्हें।

चमचा-२ : जैसे रानीजी को और तो कोई काम ही नहीं है? वैसे भी अभी वह अध्ययन, मनन और चिंतन में व्यस्त हैं। तुमसे नहीं मिल सकतीं।

जनता-२ : वैळसे नहीं मिल सकतीं! हमसे पहले जो लोग आए थे उनको रोका था जो हमें आंखें दिखा रहे हो।

चमचा-२ : वह रानीजी वेळ रिश्तेदार थे। और तुम्हें बता तो दिया है रानीजी व्यस्त हैं। ज़्यादा कान मत खाओ।

जनता-१ : देखते हैं वैळसे नहीं मिलतीं।

[पांचों गाना गाते हैं]

जनता : ओ देवी तू काण खोल सुण मेहनत करणे वालों की
ख़ूण पसीणा साथ बहाकर भूखे सोणे वालों की।
दफ़्तर वेळ बाबू की सुण ले, सुण धरती वेळ लालों की।
वुळछ बेकारों की सुण ले, वुळछ कालेज जाणे वालों की।
ओ देवी तू काण खोल सुण, मेहनत करने वालों की...
पुलिस अफ़ळसरों और सेठों की साझेदारी व़ळायम है।
तेरे भक्तों की गुण्डों से साझेदारी व़ळायम है[]
गर महंगायी भत्ता वाजिब दाम फ़ळसल वेळ नहीं मिले,
पढ़े लिखे लड़कों को जल्दी काम धाम वुळछ नहीं मिले,
हां, घर में भूखे नहीं मरेंगे, सड़कों पर आ जाएंगे,
हड़तालों वेळ बल पर अपनी मांगें सब मनवाएंगे।
नहीं सुनेंगे फिर हम झूठे भाषण देने वालों की
ओ देवी तू काण खोल सुण मेहनत करने वालों की...

रानी : हमारे मेहनतकश भाइयो, आज जब आप हमारे आश्रम पर पधारे हैं तो हमारा हृदय ख़ुशी से झूम उठा है।

चमचे : *;गाते हैंव्द्ध* झूम-झूम वेळ नाचो आज गाओ ख़ुशी वेळ गीत...

रानी : *;इशारे से चमचों को चुप कराती है।व्द्ध* हमने सुना कि हमारे पहरेदारों ने आपको रोका। बहुत बुरी बात है। आपकी जो समस्याएं हैं हमें सब मालूम हैं। लेकिन आपने हमारे हाथ बांध दिए हैं। आप ही देखिए यह दंगे-फ़ळसाद, यह धरने, यह हड़तालें, यह बोनस की, भत्ते की मांगें, ये संघर्ष की बातें यह सब कौन पैदा कर रहा है? हम या आप? इससे सारा काम उलट-पलट हो गया है, उत्पादन रुक गया है, कारख़ाने बंद हो रहे हैं, ना जाने क्या-क्या हो रहा है। लेकिन अगर आप मन लगाकर काम करेंगे और अपने काम से काम रखेंगे तो देश की हालत भी सुधरेगी और आपका असंतोष भी दूर होगा। ज़रा देश की भी सोचिए। ऐसी संकट की घड़ी में आपकी मांगें पूरी नहीं हो सकतीं। देश पर विदेशी आक्रमण वेळ बादल मंडरा रहे हैं। आज ज़रूरत है अनुशासन और कठोर परिश्रम की, आंदोलनों की नहीं। देश वेळ व़ळदम मज़बूत कीजिए फिर आपकी मांगों पर विचार होगा। जाइए। *;चमचों सेव्द्ध* दफ़ळा करो कमबख़्तों को।

[रानी जाती है।]

चमचा-१ : चलो, खिसको अब। दर्शन हो गए, जाइए, जाइए!

जनता-१ : ''जाइए''? अरे जाइए माने क्या? जाइए का मतलब क्या है, हैं? कोई बात हुई। ''आपकी समस्याएं मालूम हैं।'' ''कोई मांग नहीं मानी जाएगी, मेहनत कीजिए, धीरज रखिए।'' *;चीख़करव्द्ध* और धीरज नहीं होता। हमारी मांगें मानो नहीं तो हम यहीं, अभी, फ़ळौरन धरना देंगे।

चारों : हां, हां

जनता-१ : साथियो यहीं डटे रहो, जब तक हमारे साथ इंसाफ़ळ नहीं होता हम यहां से नहीं जाएंगे। बंद रहने दो यह कल कारख़ाने दो चार दिन, तभी होश ठिकाने आएंगे।

[पांचों बीच में बैठते हैं। चमचे रानी को ख़बर करते हैं।]

चमचे : रानीजी, ओ रानीजी,
वह सारे तो नहीं जा रहे,
वहीं खड़े हैं, वहीं अड़े हैं।
कहते हैं हम नहीं जाएंगे,
धरना यहीं जमाएंगे।

रानी : दहशत, वहशत फ़ळोन उठाओ, लाइन मिलाओ।
देश वेळ भागीदारों की, दौलत वेळ चौबारों की,
सेठों वेळ भंडारों की, भारत मां वेळ प्यारों की।
हैलो-हैलो, हां मैं बोल रही हूं।
कान लगाकर सुनो, मामला गंभीर है।
कमान से निकल गया तीर है
नारों से दाल नहीं गली,
जनता तैश में आई है।
झगड़े पर तुल आई है।

दोनों पूंजीपतिः तो हम क्या करें? धंधा बंद कर दें? मुनाफ़ळा कम कर दें? तनख़्वाहें बढ़ा दें? या तिजोरियां लुटा दें?

रानी : उत्तेजित न हों। मेरी सुनते जाएं। तुरंत यहां पर आएं, उनको वुळछ पुळसलाएं। ना माने तो धमकाएं। मेरे चमचे भी जाएंगे। ज़ोर लगाकर धौंस जमाकर, वुळछ तो हासिल कर पाएंगे।

दोनों पूंजीपतिः यह सभी लटवेळ पुराने हो गए हैं।
लोग भी काफ़ळी सयाने हो गए हैं।
अब तो दरकार डंडे राम की,
बस यही तरकीब है इक काम की।

रानी : ज़्यादा बहस नहीं कीजिए
मुझे नसीहत न दीजिए
कौन-सा काम, वैळसे किया जाता है
यह मुझसे बेहतर और किसे आता है।
जो कहती हूं वही कीजिए।
ज़्यादा बहस नहीं कीजिए।

दोनों पूंजीपतिः जो जादू की गठरी तुम को भेंट करी थी, उसवेळ अस्त्र-शस्त्र भला कब काम आएंगे?

रानी : जब ये सब ही लोग लड़ावूळ बन जाएंगे,
आपवेळ हाथों वेळ तोते उड़ जाएंगे।
अभी सिर्फ़ळ धौंसा-धौंसी से काम चलाओ,
धोखेबाज़ी, झांसेबाज़ी करते जाओ।
आगे आप खुद समझदार हैं,
सार्वजनिक असंतोष वेळ विरु(ढाल तलवार हैं।

दोनों पूंजीपतिः हें, हें, हें, अच्छा तो अब नमस्कार है।
हमारा पूरा वर्ग,
संघर्ष वेळ लिए तैयार है।

[पूंजीपति बैठते हैं]

रानी : दहशत, वहशत तुम भी जाओ। जाकर उनका हाथ बटाओ। *[रानी का प्रस्थान]*

[चमचे पांचों वेळ पास जाते हैं]

चमचा : *;पुलिस की टोपी लगाकर, डपटकरद्ध* चलो बे, उठो यहां से, नहीं तो दफ़ळा १४४ में बंद कर दूंगा।

चमचा-२ : *;नेता की सफ़ेद टोपी पहनकर, पुळसलाकरद्ध* दारोग़ाजी, यह क्या, इतना क्रोध क्यूं? आप जानते नहीं यह सब लोग कौन हैं? अरे इन्हीं वेळ मज़बूत कंधों पर तो देश का भार है। दोस्तो, दारोग़ाजी की बात का बुरा न मानें, लेकिन आपसे विनम्र विनती है कि, इस तरह हाथ पर हाथ धरे बैठकर आप राष्ट्रीय उत्पादन को नुव़ळसान मत पहुंचाइए। संघर्ष वेळ और भी तरीव़ेळ हैं। मसलन आप एक नए प्रांत की मांग कर सकते हैं, विदेशी नागरिकों को निकालने वेळ लिए आंदोलन कर सकते हैं। किसी तबव़ेळ को अगर ज़्यादा रियायतें दी गई हों तो उसका विरोध कर सकते हैं। लेकिन भगवान वेळ लिए उत्पादन न रोकिए। आपकी मांगें जायज़ हैं, सभी जानते हैं, लेकिन रानीजी कोई आपकी दुश्मन थोड़ी हैं? यह मिल मालिक सब आपका ही भला चाहते हैं, धरना उठाकर दोबारा मेहनत से काम में जुट जाइए, पहले की तरह।

जनता-१ : पहले की तरह व़ळीमतें कम कर दीजिए।

जनता-२ : हमारे बच्चों को रोज़गार दिला दीजिए।

जनता-३ : हमारी फ़ळसल वेळ वाजिब दाम दिला दीजिए।

पांचों : तो धरना अपने आप ही उठ जाएगा।

[पूंजीपति आते हैं]

पूंजीपति-१ : इन हरामख़ोरों से बात करने का यह तरीव़ळा नहीं है।

पूंजीपति-२ : दारोग़ाजी, खड़े वैळसे हो, मार-मार वेळ भुर्ता बना दो सालों का।

जनता-१ : सेठजी लद गए वह दिन। अब यह सब नहीं चलेगा।

;पुलिस वाला मारने को हाथ उठाता है, एक पात्र हाथ पकड़ लेता है।द्ध

पांचों : ख़बरदार हाथ न उठाना।

[दोनों पूंजीपति, दारोग़ा और नेता घबरा जाते हैं। पूंजीपति रानी वेळ चरणों में जा गिरते हैं।]

दोनों पूंजीपतिः हे देवी तुम हमें बचाओ।
मज़दूरों से हमें बचाओ,

दहव़ळानों से हमें बचाओ,
बाबू और शहरी लड़कों से,
हमें बचाओ, हमें बचाओ।
उनवेळ तेवर बदल गए हैं।
उनवेळ मन अब मचल गए हैं।
हे देवी हमारी सारी धमकियां, सारे झांसे पेळल हो गए। साले काम करने को तैयार नहीं। बोनस मांगते हैं। भत्ता मांगते हैं। नौकरियां मांगते हैं। न जाने क्या-क्या मांगते हैं। हड़तालें करने की धमकियां दे रहे हैं।

जनता आगे बढ़ती है।

जनता-१ : तो यहां छुपवेळ बैठे हो बुज़दिल चूहो?

जनता-२ : इसी झूठ फ़ळरेब की देवी का आश्रम नसीब हुआ तुम्हें मुंह छिपाने को।

पूंजीपति-१ : देखिए देवीजी, इन बदज़ातों की यह जुर्रत कि यहां भी आकर आंखें दिखा रहे हैं। इस पवित्र आश्रम वेळ वायुमंडल को दूषित कर रहे हैं।

जनता-१ : क्यों देवीजी, यही हैं, आपवेळ समाजवाद वेळ कर्णधार।

जनता-२ : यही है न भारतीय सभ्यता वेळ सहारे, जिनकी ख़ातिर हमारा बोनस, हमारा भत्ता, हमारी तनख़्वाह काटी जा रही है।

जनता-३ : जिनवेळ गोदाम भरने वेळ लिए हम दिन-रात ग़ुलामी कर रहे हैं।

रानी : ख़ामोश! यह राजमहल है, तुम्हारी चौपाल नहीं। तुम लोग सिर्फ़ळ अपनी ही सोचते हो। नाक वेळ आगे वुळछ देख नहीं पाते। तुम क्या समझोगे कि देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने वेळ लिए ऐसे व़ळदम उठाना कितना ज़रूरी है।

जनता : नहीं समझना हमें यह झूठ। बहुत देख लिया तुम्हारा फ़ळरेब।

रानी : बकवास बंद। सरकार काम कर रही है। हमारे पास यह खुराफ़ळात सुनने का वक़्त नहीं है। तुम मेरी दैवी शक्ति को नहीं पहचानते। अपने सपूतों, देश वेळ कर्णधारों, पूंजीपतियों, सरमायेदारों वेळ मुनाफ़ेळ में कटौती हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। तुमने हमें मजबूर किया है कि तिलस्मी गठरी में से अपने रहस्यमय अस्त्र-शस्त्र निकालें।

;उछल वूळदकर मंत्र जपती है। कंधों पर जो कपड़ा है उसे पलटकर पहनती है। उस पर काली पृष्ठभूमि पर ख़तरे का निशान है।द्ध

रानी : समाजवादम्, प्रजातंत्रम्, मीट मसाला व़ळीमा करदम्, पूर्ण स्वराज्यम्, अधिकारम्, सबको जेल वेळ अंदर करदम्,
जो भी बोलम्, उसकी गर्दन तुरंत मरोड़म्, तुरंत मरोड़म्, संसद भवनम्, निजी दौलतम्, देश की जनतम् भूखम् मरदम्।
अगरम चीख़म् अध्यादेशम्, बाहर करदम्, बाहर करदम्।
ओम नमोः हिटलरम्।
मुख्य चमचे!

चमचे : जी देवीजी।

रानी : गठरी में से निकालो, हथियार नंबरम् एकम्।

;चमचा लंबा फ़ळरमान निकालता है, पढ़ता है।द्ध

चमचा-१ : आज से सभी कर्मचारियों वेळ बोनस पर रोक लगाई जाती है तथा वेतन जाम किया जाता है।

दोनों पूंजीपतिः चैम्बर ऑफ़ळ कौमर्स, देवीजी वेळ इस व़ळदम का हार्दिक अभिनदंन करता है।

रानी : *;चमचे सेद्ध* गधे कहीं वेळ! सब गुड़ गोबर करने पर तुले हो। यह हथियार तो बाद वेळ लिए रखा था। अस्त्रम् शस्त्रम् नंबरम् एकम निकालो।

;चमचा जल्दी से गठरी में से एक तलवार निकालकर देवीजी को थमाता है।द्ध

रानी : आज से यह आदेश जारी किया जाता है कि, किसी भी ऐसे उद्योग में जो कि हमारी वुळर्सी की सेहत, और हमारे आश्रम की समृ(वेळ लिए ज़रूरी है, उसमें हड़ताल करना जुर्म है।

पूंजीपति-१ : आपकी सेहत का ध्यान रखते हुए हम इस व़ळदम का समर्थन करते हैं।

जनता-१ को मारता है। दोनों संघर्ष की मुद्रा में फ़्रीज़ हो जाते हैं।

रानी : किसी भी उद्योग में काम कर रहे मज़दूरों से किसी भी व़िळस्म का चंदा इकट्ठा करना ग़ैर व़ळानूनी है।

चमचा-१ : लेकिन देवीजी वेळ आश्रम वेळ लिए चंदा इकट्ठा करने पर कोई रोक नहीं होगी।

जनता-२ को मारता है और दोनों फ़्रीज़ हो जाते हैं।

रानी : किसी भी उद्योग में अपनी मांगों को लेकर इकट्ठा होना भी ग़ैर व़ळानूनी है।

चमचा-२ : लेकिन देवीजी की आरती उतारने वेळ लिए चंदा इकट्ठा करने पर कोई पाबंदी नहीं है। *जनता-३ को मारता है और दोनों फ़्रीज़ हो जाते हैं।*

रानी : किसी भी प्रकार का जलसा, जुलूस, मीटिंग करने पर पाबंदी है।

पूंजीपति-२ : लेकिन इन सब आदेशों वेळ समर्थन में देवीजी वेळ आश्रम वेळ बाहर जलसा करने की पूरी इजाज़त है।

जनता-४ को मारता है। और दोनों फ़्रीज़ हो जाते हैं। जनता-५ लाल झंडा

लेकर ख़ामोशी से रानी की ओर बढ़ता है। रानी मंत्रोचारण करते हुए पीछे हटती है।

रानी : चकाचौंध, आतिशबाजी,
घनघोर पाप संघार।
देशद्रोही तत्वों पर हो,
अनुशासन की मार।
देश धर्म, पूंजी सत्ता पर,
करे जो कोई वार,
मज़दूरों की मांग को लेकर,
गर हो चीख़ पुकार।
अध्यादेश का मंत्र पेळंवूळं,
कर दूं सबका नाश।
इतना डर हर ओर पैळलाऊं,
कोई न फटवेळ पास।

मंत्र वेळ दौरान रानी की घबराहट बढ़ती जाती है। आख़िर में वो डरकर बैठती है। जनता गाना शुरू करती है। पूंजीपति और चमचे भय की मुद्रा में फ़्रीज़ होते हैं।

गाना : आज जो हमसे हड़तालों वेळ छीन रहे अधिकार,
कल वह ज़िंदा रहने वेळ हवळ पर भी करें जो वार।
आज जो हमको पाठ पढ़ाते हैं, मिलकर अनुशासन का,
क्या वह महंगाई भी कम करने को हैं तैयार।
नहीं आएंगे झूठी चाल में मेहनतकश इस बार,
बार-बार वेळ अनुभव से हम हो गए हैं होशियार।
करते हैं मज़दूर आज ऐलान सरेबाज़ार,
जान गंवाकर भी न छोड़ेंगे अपने अधिकार।
नहीं साथियो, नहीं सहेंगे हम ज़ालिम की मार।

O